राग श्री कटको

राजाने मलोरे राणें राए तणों, धरम जाता रे कोई दौड़ो।
जागो ने जोधा रे उठ खड़े रहो, नींद निगोड़ी रे छोड़ो।। १ ।।

हे भारतवर्ष के राजा राणाओ! इकट्ठे हो जाओ। तुम्हारा धर्म जा रहा है। कोई तो खड़े हो जाओ। हे योद्धाओ! तुम होश में आओ और आलस्य छोड़ो।

छूटत है रे खरग छत्रियों से, धरम जात हिंदुआन।
सत न छोड़ो रे सत वादियो, जोर बढ़यो तुरकान।। २ ।।

क्षत्रियों के हाथ से तलवार अर्थात् लड़ने की भावना गिर रही है और हिन्दुओं का धर्म समाप्त हो रहा है। सत के रास्ते पर चलने वाले हे हिन्दुओ! अपने धर्म को नहीं छोड़ना। मुसलमानों की शक्ति बहुत बढ़ गई है।

कुलिए छकाए रे दिलड़े जुदे किए, मोह अहं के मद माते।
असुर माते रे असुराई करें, तो भी न मिले रे धरम जाते।। ३ ।।

कलियुग ने तुम्हें मद और अहंकार के नशे में चूर-चूर कर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं। उधर मुसलमान लोग मस्ती में जुल्म कर रहे हैं। फिर भी तुम धर्म की खातिर इकट्ठे भी नहीं हो रहे हो।

त्रैलोकी में रे उत्तम खंड भरथ को, तामें उत्तम हिंदू धरम।
ताकी छत्रपतियों के सिर, आए रही इत सरम।। ४ ।।

त्रिलोकी में भरतखण्ड उत्तम है और भरतखण्ड में हिन्दू धर्म उत्तम है। अब इस हिन्दू धर्म की रक्षा करने का भार तुम राजाओं के ऊपर है।

पन ने धारी रे पन इत ले चढ़या, कोई उपज्यो असुर घर अंस।
जुध ने करनें उठया धरमसों, सब देखें खड़े राज बंस।। ५ ।।

मुसलमानों में कोई ऐसी महान आत्मा प्रगट हो गई है जिसको कुरान से यह पहचान हो गई है कि इमाम मेंहदी हिन्दुओं में प्रगट होने वाले हैं। उन्हें पाने के लिए ही प्रतिज्ञा कर वह हिन्दुओं पर जुल्म ढा रहा है। वह धर्म युद्ध करने के लिए तैयार खड़ा है और तुम सब हिन्दू राजा खड़े तमाशा देख रहे हो।

भरथ खण्ड रे हिंदू धरम जान के, मांगे विष्णु संग्राम अरथ।
फिरत आप रे ढिंढोरा पुकारता, है कोई देव रे समरथ।। ६ ।।

भरतखण्ड हिन्दुओं की भूमि है, इसलिए औरगंजेब इमाम मेंहदी की तलाश के लिए धर्म-युद्ध के लिए चारों तरफ ढिंढोरा पीटता है कि कोई हिन्दुओं में समर्थ देवता हो तो आगे आ जाए।

असुर सत रे धरम जुध मांगहीं, सुर केहेलाए जो न दीजे।
पूछो ने पंडितो रे जुध दिए बिना, धरम राज कैसे कहीजे।। ७ ।।

मुसलमान औरगंजेब हिन्दुओं से धर्म-युद्ध की मांग कर रहा है। हिन्दू कहलाकर भी सामने न आए तो अपने को धर्म रक्षक राजा कैसे कहलाओगे? जरा अपने राज गुरुओं से पूछो।

राज कुली रे रखन रजवट, जो न आया इन अवसर।
धरम जाते जो न दौड़िया, ताए सुर कहिए क्यों कर।। ८ ।।

राज कुल की रक्षा के लिए जो राजा इस अवसर पर नहीं आएगा और डूबते धर्म को नहीं बचाएगा, वह बहादुर कैसे कहलाएगा?

Nijanand App

वेद ने व्याकरणी रे पंडित पढ़वैयो, गछ दीन इष्ट आचार।
पीछे रे बल कब करोगे, होत है एकाकार।। ९ ।।

वेद तथा व्याकरण के पढ़ने वाले पंड़ितो तथा आचार, विचार, दीन (धर्म) के पालने वालो! कब अपनी ताकत दिखलाओगे? मुसलमान हिन्दुओं को मुसलमान बनाते जाते हैं।

सिध ने साधो रे संतो महंतो, वैष्णव भेख दरसन।
धरम उछेदे रे असुरें सबन के, पीछे परचा देओगे किस दिन।। १० ।।

सिद्ध, साधु, सन्त, महन्त, वैष्णव, दर्शन शास्त्र के ज्ञाता सभी का धर्म मुसलमान नष्ट कर रहे हैं। अपनी शक्ति किस दिन दिखलाओगे?

सुनियो पुकार रे स्यांने संत जनो, जो न दौड़या जाते सत।
गए ने अवसर पीछे कहा करोगे, कहां गई करामत।। ११ ।।

हे बड़े ज्ञानी सन्तो! मेरी आवाज को सुनो। धर्म नष्ट होते समय जो नहीं आया, तो पीछे उसकी करामात (शक्ति) किस काम आएगी?

लसकर असुरों का चहुं दिस फैलया, बाढ़यो अति विस्तार।
बन ने जंगल रे हिन्दू रहे पर्वतों, और कर लिए सब धुन्धुकार।। १२ ।।

मुसलमानों की सेना चारों तरफ फैल गई है। हिन्दू लोग जंगल और पहाड़ों में डर कर छिप गए हैं। चारों तरफ अन्धकार छा गया है।

हरिद्वार ढहाए रे उठाए तपसी तीर्थ, गौवध कैयों विघन।
ऐसा जुलम हुआ जग में जाहेर, पर कमर न बांधी रे किन।। १३ ।।

हरिद्वार में मन्दिर तोड़े जा रहे हैं। तपस्वियों के तीर्थ नष्ट हो रहे हैं। गौओं का वध किया जा रहा है। ऐसा बड़ा जुल्म जाहिर होने पर भी किसी ने भी लड़ने को कमर नहीं कसी।

सुर ने केहेलाए रे सेवा करे असुर की, जो दारुवाए उड़ावे दयोहर।
हिंदू नाम रे सैन्या तिनकी होए खड़ी, ऐसा कुलिऐं किया रे केहेर।। १४ ।।

हिन्दू कहलाकर भी मुसलमानों की सेवा करते हैं। मन्दिरों को गोला बारूद से तुड़वाया जा रहा है। हिन्दुओं के बड़े-बड़े नामधारी योद्धा मुसलमानों की सेना में खड़े हैं। ऐसा इस कलियुग ने जुल्म ढाया है।

प्रभु प्रतिमां रे गज पांउ बांध के, घसीट के खंडित कराए।
फरस बंदी ताकी करके, तापर खलक चलाए।। १५ ।।

देवताओं की मूर्तियों को हाथी के पैर में बांध कर घसीटते हैं और तोड़कर सड़क पर नीचे डालते हैं। जनता के पैरों से रुंदवाते हैं।

असुरें लगाया रे हिंदुओं पर जजिया, वाको मिले नहीं खान पान।
जो गरीब न दे सके जजिया, ताए मार करे मुसलमान।। १६ ।।

औरंगजेब ने हिन्दुओं के नाम पर जजिया कर (हिन्दू होने का टैक्स) हिन्दुओं पर लगाया। जिनके पास खाने-पीने का भी साधन नहीं है और जो गरीब जजिया कर नहीं दे पाते, उसे मारते हैं और मुसलमान बना देते हैं।

Nijanand App

सास्त्रें आवरदा कही कलजुग की, चार लाख बत्तीस हजार।
काटे दिन पापें लिख्या मांहें सास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार।। १७ ।।

शास्त्रों में कलियुग की आयु चार लाख बत्तीस हजार वर्ष बताई गयी है जो पाप के कारण घट गई है। इसका शास्त्र विचारने से पता लगता है।

सोले सै लगे रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह सै पैंतीस।
बैठाने साका विजिया अभिनन्दका, यों कहे सास्त्र और जोतीस।। १८ ।।

शाका शालिवाहन का सोलह सौ और विक्रम सम्वत् सत्रह सौ पैंतीस लग गया है। अब ज्योतिष और शास्त्रों के हिसाब से विजियाभिनन्द बुधजी का शाका शुरू हो गया है।

कलिजुगें चेहेन रे अंत के सब किए, लोक बतावें अजूं दूर अंत।
अर्थ अंदर का कोई न पावे, बारे अर्थ बाहेर के ले डूबत।। १९ ।।

कलियुग के समाप्त होने के सभी निशान प्रकट हो गए हैं। संसार के लोग कहते हैं कि अभी कलियुग का अन्त दूर है। यह बाहरी अर्थ लेकर डूब रहे हैं। अन्दर का अर्थ यह नहीं लेते।

बातने सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तरवार।
सेवाने लई रे सारी सिर खैंच के, सांइए किया सैन्यापति सिरदार।। २० ।।

इस बात को बुंदेला छत्रसाल ने सुना और धर्म-युद्ध के लिए तलवार लेकर आगे आए। सारी सेवा औरंगजेब से लड़ने की अपने सिर ले ली। श्री प्राणनाथजी ने राजतिलक करके उसे सेना का राजा बना दिया।

प्रगटे निसान रे धूमरकेतु खय मास, पर सुध न करे अजूं कोई इत।
बेगेने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहे महामत।। २१ ।।

विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार के प्रगट होने का निशान धूमकेतु तारा जाहिर हो गया है। एक मास का क्षय भी हुआ है, परन्तु फिर भी कोई विचार नहीं कर रहा है। महामति जी पुकार कर कहते हैं, हे बुधजी! आप शीघ्र ही प्रगट होइए।

।। प्रकरण ।। ५८ ।। चौपाई ।। ६५९ ।।

राग श्री

ऐसा समे जान आए बुध जी, कर कोट सूर समसेर।
सुनते सोर सब्द बानन को, होए गए सब जेर।। १ ।।

भारतवर्ष में हिन्दू धर्म की ऐसी विकट परिस्थिति में पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी करोड़ों सूर्य से भी अधिक तेज वाली जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) की तलवार लेकर आए। जिनकी सत वाणी के शब्दों के शोर से सब धर्माचार्य परास्त हो गए।

काटे विकार सब असुरों के, उड़ायो हिरदे को अंधेर।
काढ़यो अहंकार मूल मोह मन को, भान्यो सो उलटो फेर।। २ ।।

मुसलमानों के दिलों के भी अज्ञानता रूपी अन्धेरे को मिटाकर उनके अहंकार रूपी विकारों को जड़ से समाप्त कर दिया और उनकी उलटी चाल (तलवार के डर से मुसलमान बनाना) को सीधा कर दिया।

Nijanand App